Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 12/April/2025 **IJRAW:** 2025; 4(5):171-173 **Accepted:** 19/May/2025

अमरकान्त के उपन्यासों में लोक जीवन

*[1]डॉ. स्नेहलता निर्मलकर

*[1]सह–प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ.सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

कथावस्तु, पात्र, चरित्र–चित्रण, संवाद, कथोपथन, देशकाल, वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य आदि तत्वों के सम्मिश्रण को उपन्यास कहते हैं। उपन्यास उप + न्यास नामक दो शब्दों के मेल से बना है। उप का तात्पर्य है– समीप और न्यास का अर्थ है– धरोहर, या थाती। इसका सामूहिक अर्थ है मनुष्य के निकट रखी वस्तु। अर्थात् उपन्यास ऐसी घटनाओं का संग्रह है, जिसको पढकर यह अनुभव हो कि इनकी घटनाएँ, हमारे जीवन से सम्बन्ध रखने वाली पूर्ण या आंशिक प्रतिबिम्ब हैं। उपन्यास को अंग्रेजी में नावेल, गुजराती में नवलकथा, मराठी में कादम्बरी और बैंगला में उपन्यास आदि पर्याय से जाना जाता है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास की परिभाषा गढ़ते हुए कहते हैं कि मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। उपन्यास एक विस्तृत आकार में गद्यात्मक पाठ है। यह मानव चरित्र की परिधि पर विभिन्न रहस्यों के उलझे हुए प्रसंगो का दीदार करता है।

मुख्य शब्दः उपन्यास, अमरकान्त, लोक जीवन।

1. प्रस्तावना

हजारी प्रसाद द्विवेदी का नित्चार है उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नए गद्य के प्रचार के साथ–साथ उपन्यास का प्रचार हुआ है. आधुनिक उपन्यास केवल कथा मात्र नहीं है और कथाओं एवं आख्यायिकाओं की भाँति कथा–सूत्र का बहाना लेकर उपमाओं रूपकों, दीपकों, श्लेषों की छटा और सरस पदों में मुक्त पदावली की छटा दिखाने का कौशल भी नहीं है। यह आधुनिक वैयक्तिकता वाली दृष्टिकोण का परिणाम है। उपन्यास बनावट के क्रम में शुद्ध गद्यात्मक ढांचा है। यह गद्य के मिलावटी एवं बनावटी मजबून से इतर होते हुए। गद्य की कसौटी पर खरा है। उपन्यासकार मानव जीवन को सुखात्मक एवं दुःखात्मक घटनाएँ तारतम्यता के साथ प्रदर्शित करता है। इसका सीधा सम्बन्ध मानवमात्र की अनुभूतियों से होता है। यह मानव जीवन से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं का दर्पण है। इस पर चलचित्र के रामान अनेक दृश्यों का दर्शन होता है। इसका सम्बन्ध भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों से होता है। उपन्यास के सन्दर्भ में राम विलास शर्मा का मत है कि उपन्यास मात्र कथात्मक गद्य नहीं है. वह मानव जीवन का गद्य है. जो सम्पूर्ण मानव को लेकर उसे अभिव्यक्ति प्रदान करने की चेष्टा करत है। उपन्यारा को गद्य की विस्तृत विधा तक सीमित नहीं रखा जा सकता है। इसमें मानव के समस्त कार्यव्यवहार एवं हृदय में जागृत विविध सन्दर्भ को भाव में पिरोया रहता है। उपन्यास मानवीय हृदय के विशद और सहज उच्छवास का व्यापक प्रांगण है, इसकी सीमा अधिक विस्तृत होती है।

अमरकान्त का नाम हिन्दी कथा साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्हें मुंशी प्रेमचन्द के उत्तराधिकारी के रूप में समझना कहाँ तक समीचीन है। आप स्वतंत्र भारत के सशक्त उपन्यासकार है। इनके उपन्यास की कथा वस्तु निम्नमध्यवर्ग के जीवन परिधि के आसपास विचरण कर रही है। आजादी के सुन्दर सपनों पर विश्वास एवं उनके वास्तविक रूप में काफी फर्क दिखाई देता है। आजादी गिलने के बाद भारतीय जनमानस में क्रान्तिकारी आर्थिक परिवर्तन नहीं हो पाया है। वह वर्ग अपने आपको उपेक्षित महसूस करने लगा। यह वर्ग विकास की मुख्य धारा से पृथक है। साधारण जन अपने आदिम स्वरूप में जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। वैज्ञानिक प्रगति से विपरीत अपने अनुभव के राहारे वजूद

***Corresponding Author:** डॉ. स्नेहलता निर्मलकर

बचाने के लिए संघर्षरत है। ऐसे लोगों के जीवन को लोक जीवन कहा जाता है। जिसमें जनवाद की सुगन्ध आती है। कमला प्रसाद पाण्डेय का मत है कि वह हाड–मांस के पुतलों की. उनकी भाषा, विचार और चेहरों की लिपियों के भीतर समाजशास्त्रीय विश्लेषणों से जितना झाँकता है, उतना वह जनवाद के पास आता है। अमरकान्त के उपन्यासों पर गोर्की और प्रेमचन्द का प्रभाव झलकता है। भावपक्ष मानव मात्र की संवेदनाओं पर केन्द्रित है। साधारण आदमी की अस्मिता और उनके जीवन के आदर्श एवं यथार्थ को लेखक बहुत सफाई के साथ प्रस्तुत करता है।

2. लोक जीवन का स्वरूप

अमरकान्त के उपन्यासों में लोक जीवन का स्वरूप, भारतीय समाज के विभिन्न विविधताओं का दर्शन कराता है। लोगों को सुख–सुविधा के लिए संघर्ष करने की चर्चा स्वप्न जैसा प्रतीत होता है। अपनी सीमित आवश्यकताओं के लिए असीमित प्रयास करने के बावजूद सफलता नहीं मिलती है। भारतीय जनमानस को समझाने के लिए हमें तीन भागों में विभाजित करना चाहिए। प्रथम भाग में वे लोग आते हैं, जिनके परतंत्र भारत में अग्रेजों से कुछ रिश्ते भी हैं या राजशाही परम्परा से जुड़े हुए लोग हैं। जो अपने आपको सरकार का एक अंग समझते रहे हैं। दूसरा वर्ग रियासत से जुड़ा हुआ कार्यकर्ता वर्ग है या अंग्रेजों की नौकरी करने वाल। समूह है। इन लोगों का रोटी, कपड़ा, मकान आसानी से चल जाता है। भारतीय समाज की सबसे अध्म स्थिति आम नागरिक की है। इनकी संख्या सबसे अधिक है ते लोग सामाजिक व्यवस्था की अन्तिम कड़ी हैं। इनका हाथ खाली है। इनकी सीमित आवश्यकताओं की पूर्ती सम्भव नहीं है। लेकिन ऐसे लोग अकर्मण्य नहीं है। परिश्रम करके विभिन्न उत्पादों के पारिश्रमिक से जीवन चलाना ही प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। स्वास्थ्य शिक्षा सुख–सुविधा से कोशों दूर ग्रामीण नागरिक के जीपन को लोक जीवन कहा जाता है। इनकी दुनिया का शहर ग्रामीण भारत है, ये आदि मानव जैसे परिवेश में रहते हैं।

अमरकान्त अपने अधितर उपन्यासों में ग्रामीण समाज के निम्न या मध्यवर्गीय लोक के जनमानस की बात करते हैं और उन्हें केन्द्रीय स्थान दिया है। क्योंकि हमारा देश तभी बढ़ेगा जब गाँव और शहर दोनों प्रगति के रास्ते पर चलेंगे। अमरकान्त मूल रूप से गाँव और शहर के साधारण लोगों के हिमायती हैं, उनका मानना है कि ष्यह जरूर है कि गाँव के लोग सरल होते हैं, वे दुःख को सदियों से भाग्य और मजबूरी के संतोष के सहारे वहन करते रहे हैं। गाँवों में सदियों से एक व्यवस्था थी, एक स्थिरिता थी। यह एक सामंतवादी व्यवस्था थी, जिससे साधारण किसानों की हालत गुलामी की थीष् इसमें भाग्यवादी, साधारण आदमी, और मजबूर जन के शब्द आम आदमी की ओर इशारा कर रहें हैं।

लोक जीवन का स्वरूप जो अमरकान्त के उपन्यासों में अभिव्यक्त है, उसमे साधारण आदमी का परिवेश क्या है वे गन्दी बस्तियों में जीवन बिताने के लिए अभिशप्त हैं। पूरी तरह प्रकृति की गोद में रहते हैं। उसकी गुलागी स्वीकार कर लेते हैं। वे करते अधिक, उनको मिलता कम है। साधारण ओढ़नी एवं विछवनी के मुसाफिर हैं। ये लोग निस्पृह जीवन जीने के आदी होते हैं। लोग इनको सामाजिक जीवन का पूर्ण सदस्या समझने से परहेज करते हैं। अशोक कुमार सुमन का मत है– मेरी समझ से अमरकान्त ने परिवेश और वस्तुगत परिस्थितियों की भिन्नता के बावजूद हिन्दी कथा साहित्य में उसी भूमिका का निर्वाह किया है. जो सोवियत साहित्य में टालस्टाय ने किया था। ''अमरकान्त'' ने अपने उपन्यासों में आग आदगी के पक्षधर दिखायी देते हैं, क्योंकि गरीब–अमीर के बीच एक खाई बनी है। श्रम गरीब करें, उसका उपभोग अमीर आदमी करें। लेखक सहन नहीं कर पाया। साधारण नागरिक की ज्वलन्त समन्याओं को सामने रखने का प्रयास किया है।

3. लोक जीवन में सामाजिक मान्यताएँ

जब प्रत्येक जनसमुदाय अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेकानेक प्रयत्न करते हैं। इस सामूहिक प्रयत्न को जनरीति (थ्वसांूले) कहा जाता है। यह जनरीति परम्परागत एक पीढ़ी के समुदाय से दूसरी पीढ़ी दर पीढ़ी सफल अनुभवों का पुंज होती है। यह इनता विश्वसनीय हो जाता है, कि लोग इसे सफल जीवन का आधार समझने लगते हैं। तब इसे प्रथा (ब्ंजवउ) कहा जाता है। प्रथाओं को साधारण आदमी, सामाजिक डर, लोक–निन्दा और सामाजिक बहिष्कार के भय से कानून के समान मानता है। कानून के दमनात्मक अनुशासन और लोक प्रथा को स्वानुशासन कहा जाता है। इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी चलती जन रीतियों को सामाजिक मान्यताएँ कहते हैं। यह अशिक्षित, अल्पशिक्षित और धार्मिक समाज की मान्यता प्राप्त विधि है इस प्रकार के लोग इस विधि का प्रयोग करते हुए, अपने समस्त सामाजिक क्रिया कलापों का क्रिर्यान्वयन करते हैं।

लोक जीवन में सामाजिक मान्यताओं को प्रथा कहतें हैं। प्रथाओं के संबंध में मैकाइवर एवं पेज का कथन है समाज से मान्यता प्राप्त विधियाँ ही समाज की प्रथाएँ हैं। अतः यह सामाजिक स्वीकृति की प्रणाली है। समाज इसको चुनौती देने में सक्षम नहीं होता। उसी रास्ते पर चलना श्रेयस्कर समझता है। प्रो० बोगार्डस का–कथन है–प्रथाएँ और परम्पराएँ समूह द्वारा स्वीकृति नियन्त्रण की यह प्रविधियाँ हैं, जो कि खूब सुप्रतिष्ठित हो गयीं हैं। जिन्हें स्वीकार कर लिया गया हो और जो पीढी–दर पीढ़ी हरतान्नरित हो रही हो। इस तरह प्रथा, परम्परा, रीति को मिलाकर सामाजिक मान्यता को दर्जा दिया जाता है। यह लोक जीवन के संचार का आधार है।

अमरकान्त के उपन्यासों में लोक जीवन की सामाजिक मान्यताओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि अमरकान्त के उपन्यासों में पात्र मध्य या निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह जन समुदाय आम लोगों का समूह है जिसके जीवन का आधार ही रीति, परम्परा, प्रथा,

मान्यताएँ होती हैं। इसका दृश्य उपन्यासों में है। लोक के नागरिकों की पहली पसंद स्वाथ्य होता है। स्वास्थ्य के लिए व्यायाम या कसरत करने की जरूरत होती है। उसके लिए संसाधन नहीं होते हैं। यह जन समुदाय संसाधनों के अभाव में स्वनिर्मित परम्परागत साधन से अपना कार्य करता है जो इस प्रकार है –हमेशा अपने से मजबूत आदमी से पंजा लड़ाना चाहिए। पंजा लड़ते समय सभी अंगुलियों को आगे तानकर पूरे पंजे को टेड़ा करते जाना चाहिए। घर पर रोज एकान्त में आध एक घंटा खिड़की की किसी छड़ में अंगुलियों को फसाकर ऐठने की कोशिश करने में गट्टा बहुत मजबूत होता है। प्रबुद्ध लोक मानव का मानना है कि ताकतवर शरीर से बढ़कर दुनिया की अन्य चींजे फीकी होती हैं। क्योंकि इस लोक में विभिन्न कार्य सम्पादन के लिए संसाधन का आभाव होता है। लोग अपने मेहनत के बल पर भी अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं। साथ ही आत्मरक्षा के लिए संसाधनों का निर्माण भी करते हैं। यथा–उसके कंधे पर बाँस की गजबूत खपच्ची और ताल से बना एक धनुष लटका था और हाथ में तीन चार तीर थे। तीर भी बाँस की खपच्चियों से बने थें। और उनके सिर पर लोहे के काले और तेज भालानुमा फल लगे थे। इस तरह परम्परावादी लोग अपने जीवन यापन करने के साधन तैयार करते हैं।

उपसंहार

अमरकान्त के उपन्यासों में लोक जीवन के विविध पक्ष पर गम्भीरता के साथ विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया। लोक जीवन के पक्ष की सीमा महासागर जैसी कही जा सकती है। उस महासागर से अमरकान्त गोता लगाकार जितना लोक जीवन रूपी मोती निकाल पाये थे। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लोक जीवन के स्वरूप, मान्यताएं, युवा लोक मानस, स्त्री जीवन, आर्थिक संदर्भ जैसे मुख्य तत्वों के माध्यम से लोक जीवन की समग्रता एवं व्यापकता के रूप में प्रस्तुत होता है। अमरकान्त के उपन्यासों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इनके उपन्यास निम्न मध्यवर्गीय लोक जीवन का सशक्त दस्तावेज है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मनोज कुमार, उपन्यास की परिभाषा, हाशा हिन्दी, ब्लाग्सवोट डाट काम
2. रामविलास शर्मा, उपन्यास और लोकजीवन, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली पृष्ठ 16
3. रामविलास शर्मा, उपन्यास और लोकजीवन वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, भूमिका भाग
4. कमला प्रसाद पाण्डेय, अमरकान्त के उपन्यास, अमरकान्त के मूल्यांकन, सामयिक बुक्स नयी दिल्ली पृष्ठ 291
5. मधुरेश, अमरकान्त, साहित्य अकादमी प्रयागराज 2018 पृष्ठ 49
6. सत्य प्रकाश मिश्र, अमरकान्त के साथ साक्षात्कार, अमरकान्त एक मूल्यांकन सामयिक बुक्स नयी दिल्ली पृष्ठ 118
7. रवीन्द्र कालिया, अमरकान्त एकःमूल्यांकन, सामयिक बुक्स नई दिल्ली पृष्ठ 210
8. अमरकान्त, सूखापत्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2017, पृष्ठ 9
9. मधुरेश, अमरकान्त, साहित्य अकादेमी 2018 पृष्ठ 78।